ज़िंदगी के तूफानों से लड़ती एक औरत

-सना

यह कहानी है जिंदगी के तूफानों से लड़ती एक और की जिसके सपने पूरे नहीं होने दिए गए या यूँ कहें कि परिस्थितियों ने उसका साथ नहीं दिया।

फिर भी वह हर बार हार कर भी फिर से लड़ने के लिए तैयार हो जाती। उसकी जिंदगी में संघर्ष की शुरुआत जब वो तीन साल की थी, तभी हो गई थी। तीन साल की उम्र में ही उसके पिता को शराब में जहर देकर मार दिया गया था। फातिमा के पिता अपने इलाके के नामी डकैत थे जिन पर पुलिस ने इनाम रखा था। इसलिए उन्हें मारा दिया गया था। फातिमा अपने घर की सबसे छोटी बेटी थी। उससे बड़ी एक बहन और एक भाई था। पिता की मौत के बाद उसकी माँ ने भाई को तो मुंबई काम सीखने भेज दिया लेकिन दोनों बहनों की पढ़ाई छूट गयी। बड़ी बहन ने चौथी और भाई ने आठवीं तक पढ़ाई कर ली थी लेकिन फातिमा को तो अभी स्कूल गए ही छः महीने मुश्किल से हुए थे कि उसकी पढ़ाई छूट गयी। भाई के मुंबई जाने के बाद दोनों बहनों और फातिमा की माँ ने जरदोजा का काम सीखा। एक साल बाद उन्होंने घर पर ही अड्डा लगा लिया और काम करने लगी। फातिमा ने अपना सारा बचपन उसी अड्डे के नीचे बिता दिया। रात को दस-ग्यारह बजे तक जरी का काम करना और सुबह पाँच बजे उठकर फिर लग जाना। घर नहीं थी। सिर्फ अंदाज या तारे देखकर समय पता करते थे जिस कारण कभी-कभी सुबह हो जाती थी काम करते-करते। घर में इतना खटने के बावजूद उन्हें ठीक से रोटी भी नहीं मिल पाती थी। पूरा-पूरा दिन सिर्फ एक बार खाकर गुजारना पड़ जाता था।

फातमा ने पढ़ने की बहुत ललक थी इसलिए वह पैसे बचा कर अपने पड़ोसियों से या फिर डाक से किताबें मँगवा लेती और रात को काम के बाद किताबें पढ़ती। इस तरह उसने उर्दू और हिन्दी सीख ली। काम से बचे समय में जब फातिमा की माँ और बहन सोती थी तब वह अपने शौक पूरे करती थी, जैसे- पढ़ाना-लिखना, कढ़ाई, बुनाई, पेन्टिंग आदि। ये ही उसके शौक नहीं थे, उसके शौक और भी थे, जैसे बाहर घूमना, देश-दुनियाँ के बारे में जानना इत्यादि। चूंकि वह एक मुस्लिम परिवार से थी इसलिए वह ऐसा कुद नहीं कर सकती थी लेकिन उसने इसके लिए लड़ना कभी नहीं छोड़ा। फातिमा की माँ एक कट्टरपंथी मुसलमान थी। घर में माँ हमेशा पाँचों वक्त की नमाज पढ़ती और बच्चों को भी पढ़ाती। रोज सुबह कुरान भी पढ़ने को कहती और खूद भी पढ़ती। लेकिन फातिमा हमेशा ही लड़ती कि इससे क्या मिलेगा। कुरान के मायने भी समझाती लेकिन उसे काफिर कह कर या कुछ ताने देकर चुप करने की कोशिश की जाती।

कुछ समय बाद फातिमा की माँ ने घर का काम संभाल लिया और दोनों बहनें मिलकर काम करने लगीं। भाई ने मुंबई में बहुत कमाया लेकिन घर पर हमेशा नाममात्र ही दिया। जब बड़ी बहन शादी के लायक हुई तो रिश्ते जो भी आते फातिमा को पसंद करके चले जाते। आखिरकार बड़ी बहन की शादी तो हो गई लेकिन जिससे शादी हुई वह उसे पसंद नहीं था।

लभगत एक साल बाद ही फातिमा की शादी अपनी बुआ के सबसे छोटे लड़के के साथ हुई। फातिमा काफी अच्छे घर में आयी थी लेकिन जिससे उसकी शादी हुई थी-हनीफ, वह एक आवारा किस्म का इन्सान था। शादी से पहले फातिमा की माँ ने केवल एक शर्त पर शादी की थी कि हनीफ पहले कोई काम करे। हनीफ ने मोटर मैकेनिक का काम शुरू किया लेकिन शादी से पहले ही छोड़ कर वह मुम्बई चला गया। जब मुंबई से लौटा तो यह कह कर शादी कर दी गई की बाद में सुधर जाएगा। इसी के साथ फातिमा ने नई जिंदगी में कदम रखा। अब वह बेटी नहीं बल्कि बहू थी जो एक भरे-पूरे, पैसे वाले परिवार में आयी थी जहाँ उसके परिवार में छः ननद और दो जेठ थे। दो नगदों और जेठों की तो शारी हो चुकी थी। चूंकि वह गरीब थी इसलिए उसे हर काम में ताने सुनने को मिलते थे।

अपने यहाँ घर के सारे काम माँ करती थी या बड़ी बहन। वह तो सिर्फ अड्डे पर ही बैठी रहती थी। इसलिए वह खाना बनाना नहीं जानती थी। हालांकि उसे सिलाई, कढ़ाई और बुनाई अच्छी तरह आती थी। हनीफ भी ताश खेलने के अलावा कुछ नहीं करता था, जिस वजह से घर के सभी लोग फातिमा को परेशान करने लगे, उसे ताने देने लगे। वे हर बात पर उसे कुछ ने कुछ कह देते लेकिन बहू होने के कारण फातिमा उन्हें कुछ कह भी नहीं सकती थी।

इस घर का एक नियम था- शादी के एक साल बाद नए जोड़े का परिवार से अलग होना। इससे पहले हनीफ से बड़े दोनों भाईयों का चूल्हा अलग किया गया था। एक साल बाद फातिमा की एक लड़की हुई जिसका नाम नूरी रखा गया। उसके जन्म के छः महीने बाद फातिमा की सास ने उसे और हनीफ को बैठा कर बड़े आराम से कहा कि ये जो कोठी तुम देख रहे हो, ये हमने बड़ी मेहनत से बनाई है। हम भी पहले झोपड़ी में रहे हैं और अब तुम भी खुद मेहनत करके अपना आशियाना बनाओं। फातिमा अपनी दादिया सास यानि हनीफ की दादी के मकान में रहने लगी। मकान में एक बरामदा था जिसमें वह किराये पर रह रही थी। उन्होंने कोई कमरा नहीं दिया था। इतना सब होने के बाद भी हनीफ ने काम करना शुरू नहीं किया। फातिमा ने ही अपना पुराना काम शुरू कर दिया। वह बारह नहीं निकल सकती थी इसलिए व्यापारी घर पर ही उसे काम देता और ले जाता था। काम तो अकेले फातिमा करती थी लेकिन सारे पैसे हनीफ ले लेता था अक्सर वह पैसे जुए में हार जाता। जब कभी जीत जाता, तो घर में राशन खरीद कर रख देता।

नूरी एक साल की हो गई थी और अब वह खाना-खाने लगी थी। काम करने के बावजूद भी फातिमा को भूखा सोना पड़ता था। कभी-कभी काम न मिलने पर दो-दो, तीन-तीन दिन तक उसे भूखा रहना पड़ता था। एक बार तो घर में कुद खाने को नहीं था। फातिमा तो समझादार और बड़ी थी, भूखी रह सकती थी, लेकिन बच्चे को तो खिलाना ही था। नूरी सुबह से भूखी थी और रो रही थी। फातिमा क्या करे, उसे खाने को क्या दे समझ में नहीं आ रहा था। तभी काम देने वाला आया। फातिमा ने काम लिया और उससे कुछ पैसे माँगे। फातिमा के पैरों में अदृश्य बेड़ियाँ थीं जिसके चलते वह बाहर नहीं निकल सकती थी। उसे इतना गुस्सा आ रहा था इस समाज पर कि वह कुछ भी कर सकती थी। उसने व्यापारी से ही चावल और दाल मँगवाई और पका कर नूरी को दी और उसी दिन उसने ठान लिया कि अब वह यहाँ नहीं रहेगी। लेकिन हर काम इतनी जल्दी हो जाये तो फिर क्या। इस घटना के एक साल बाद ही फातिमा की दूसरी लड़की हुई। दुसरी लड़की? यह सुनते ही सभी की साँसें जैसे रु गईं। एक दूर के रिश्ते की सास थी जो पास में ही रहती थी। उन्होंने तो हद ही कर दी और बयान करके रोने लगीं। हाय-हाय, मेरे हनीफ का नसीब ही खराब है। या खुदा, एक लड़का दे दिया होता। घर में मातम-सा मनने लगा, जैसे कोई मर गया हो। ससुराल से तो कोई आया ही नहीं। फातिमा की माँ ने आकर सब कुछ संभाला क्योंकि इस बार जच्चगी के पंद्रह दिन पहले ही काम बंद हो चुका था। घर में चटनी के सिवाय कुछ नहीं था। इस बात से हनीफ के ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ता था क्योंकि वह तो सुबह चाय पीकर निकलता और शाम को अपने घर से खाना खाकर ही आता था। दिन भर वह ताश खेलता रहता था।

किसी तरह लड़ते -झगड़ते दिन कट रहे थे। एक दिन फातिमा का भाई दिल्ली से उससे मिलने आया। जब उसने घर के हालात देखे तो कहा कि हनीफ को मैं अपने साथ ले जाकर काम सिखा दूँगा। मेरे साथ काम करेगा तो कुछ कमाएगा और घर का खर्च चलेगा। फातिमा के भाई ने दिल्ली में फैक्ट्री लगाई थी, रेडीमेड कपड़े सिलने की। हनीफ दिल्ली चला गया और वहाँ पर काम करने लगा। दो-तीन महीनें में वह घर आता तो तीन-चार सौ रुपये दे जाता। फातिमा अभी भी काम करती रही। हनीफ अपनी हरकत से बाज नहीं आता। वह फैक्ट्री का कोई न कोई सामान चुराकर बेच देता। फातिमा के भाई हारून ने कई बार उयसे समझाया लेकिन जब वह नहीं माना तो उसे नौकरी से निकाल दिया।

हनीफ फिर वापस अपने घर आ गया। छोटी लड़की के तीन साल के होने के बाद एक लड़का हुआ। जहाँ पिछली बार कोई नहीं आया था वहीं बेटा होने की खबर मिलते ही सभी वहाँ आ गए। इस बार लगातार काम चला तो कुछ पैसे भी जमा थे, इसलिए मेहमानों की खूब खातिर की गयी। पिछली बार जहाँ लड़की के होने का दुःख था, वहीं लड़का होने पर लोग खिलखिला रहे थे। फातिमा की सास तो सुबह पाँच बजे ही आ गई। पूरी रात वह बच्चे को गोद में लिए बैठी रही और ढोल बजवाती रही क्योंकि यहां के लोगों का मानना है कि अगर पहल रात बच्चा सो जाएगा तो उसकी किस्मत हमेशा के लिए सो जाएगी।

लड़के का नाम सलीम रखा गया।

फातिमा ने नूरी का दाखिला सरकारी स्कूल में करा दिया। उसके एक साल बाद ही फातिमा ने गाँव छोड़ने का फैसला कर लिया। वह अपने मायके में रहने चली गयी। पिता की मौत के बाद ही वह अपनी माँ के साथ ननिहाल चली गयी थी। दादा ने इस डर से कि कहीं फातिमा की माँ दूसरा निकाह न कर ले जायदाद में उसे हिस्सा नहीं दिया था। लेकिन जिस मकान में फातिमा अब रहने आयी थीवह बारह बीघा में बनी कोठी थी जिसमें कोई नहीं रहता था। काफी समय से ये कोठी बंद थी और गाँव में रहने वाले लोगों का मानना था कि उसमें भूत-चुड़ेल रहते हैं। फातिमा इन बातों को अंधविश्वास मानती थी क्योंकि वह एक जागरुक औरत थी। वह उसी कोठी में अपने बच्चों के साथ रहने लगी। उसने गाँव में रह कर जरदोजी का काम कराया एक साल के लड़के को गोद में लिए उसे अट्ठार अड्डे चलाए। इस गाँव की बेटी होने के नाते वह बारह निकल सकती थी। हनीफ शहर से माल लेने जाता था और पैसे भी उसी के हाथ में रहते थे। जिस दिन हनीफ शहर चला जाता उस दिन फातिमा मकान में अकेली रह जाती थी। काम देने-लेन जाने में लड़के को ले जाती लेकिन लड़की को अकेली छोड़ जाती। इस परेशानी को देखते हुए एक बार फिर माँ को वहीं बुला लिया।

फातिमा ने अपनी लड़की नूरी को आंगन बाड़ी भेजना शुरू किया। लेकिन गाँव के हालात को देखकर वह यहाँ रहना नहीं चाहती थी। एक तो वहां कोई भी चीज नहीं मिलती थी। हफ्तों भर एक ही तरह का खाना-खाना पड़ता था। कोई भी यातायात का साधन नहीं था। सारे पैसे हनीफ के हाथ में रहते थे। बचत के पैसों से वह जुआ खेलता था। घर में बच्चे भूखे हैं इससे उस पर कोई फर्क नहीं पड़ता था। हनीफ के तो अब ज्यादा ही मजे थे क्योंकि अब उसे पहले वह काम क्यों करता। घर के ये हालात देखकर फातिमा ने की माँ ने उसे दिल्ली जाने की सलाह दी।

इस बार काम के पैसे आये तो फातिमा ने फौरन ही सामान बाँधा और दिल्ली के लिए रवाना हो गई। भाई ने अपना कमरा उसे दे दिया। फातिमा और उसका परिवार अब एक छोटी कॉलोनी में किराए के एक कमरे में रहने लगे।

फातिमा ने अपने भाई से कहकर हनीफ को सिलाई की फैक्ट्री में लगवा दी। उसने अपना सारा जेवर बेच कर इस काम के लिए भाई को पैसे दिए। उस साल स्कूल खुलते ही फातिमा ने अपने तीनों बच्चों को स्कूल भेजना शुरू कर दिया। घर में सब कुछ ठीक चल रहा था। हनीफ ने चार साल तक फैक्ट्री चलाई। जिंदगी के ये ही चार साल थे जो कुदरत ने उसे आराम करने के लिए दिये।

चार साल बाद हनीफ जेल चला गया। कोई पुराना केस था जिसमें एक बार वह खुद भी जेल जा चुकी थी। उस समय नूरी आठ-नौ महीने की थी। फातिमा की जमानत उसके बड़े जेठ ने की थी। हनीफ के जेल जाने के बाद फातिमा ने फैक्ट्री चलानी शुरु की। लोग इस बात पर अचंभा मानते कि जो औरत घर से बाहर बहुत कम निकलती हो जिसे काम का कोई अनुभव भी नहीं, वह कैसे इतनी बड़ी फैक्ट्री चला लेगी। फातिमा ने फैक्ट्री चलायी। उसके पास अब काफी अच्छी आमदनी थी, क्योंकि अब लॉटरी और सट्टे पर बर्बाद होने वाले पैसे भी बच रहे थे। कुछ ही दिनों बाद पता चला कि हनीफ को उम्र कैद हो गई। फातिमा ने इन दिनों इतना नाम कमाया था कि वह जिसके पास से जब भी चाहे काम उठा सकती थी। मार्केट में हर कोई काम देने को तैयार बैठा था। जब उसे पता चला कि हनीफ को उम्र कैद हो गई है तो उसे यकीन हो गया कि अब घर उसी को चलाना है। उसने गाँव से माँ को फिर बुला लिया। फातिमा ने इसी बीच लोनी में एक प्लाट खरीद लिया। ससुराल वालों को जब पता चला कि उसने प्लाट खरीदा ही तो हंगामा मच गया कि हनीफ की पैहरवी करने बजाय वह जमीन खरीद रही है। उसके ससुर ने हाईकोर्ट में केस लड़कर छः महीने की भाग-दौड़ के बाद हनीफ को बाहर निकाल लिया। जब हनीफ बाहर आ गया तो उन्होंने कहा कि तुम ठेकेदारी कर लो और फातिमा को फैक्ट्री चलाने दो। वह फैक्ट्री अच्छी तरह चला रही है, मैं तुम्हें गाजियाबाद के ठेके दिला दूँगा, आराम से करना।

फिर क्या था, हनीफ को लगा मुझसे ज्यादा कोई घरवालों का प्यारा ही नहीं है। घर आया तो आते ही गाँव जाकर रहने की बात कहने लगा। जब फातिमा ने मना किया तो लड़ाई शुरु हो गई। उसने फातिमा से फैक्ट्री की चाबी भी छीन ली। छः-सात महीने तक यूँ ही लड़ाई होती रही। इस बीच फातिमा लोनी में आ गई और एक किराए के मकान में रहने लगी। वह अपना मकान बनाने का सपना संजोती रही और उधर हनीफ धीरे-धीरे लॉटरी में सब कुछ बर्बाद करता रहा। एक दिन फातिमा को पता चला कि हनीफ ने फैक्ट्री खुली ही नहीं और न ही उसका किराया दिया गया। फातिमा ने फैक्ट्री का बचा सामान खुली ही नहीं और न ही उसका किराया दिया गया। फातिमा ने फैक्ट्री का बचा सामान उठाया और घर चली गई। आते ही घर में लड़ाई शुरू हो गई। सिर्फ एक ही बात की रट की जब तक गाँव नहीं चलोगी तब तक ऐसा ही होगा। मैं खर्च भी नहीं दूँगा। फातिमा गाँव जाने को राजी नहीं थी क्योंकि वह आगे बढ़ने के बाद अब कभी पीछे जाने को तैयार नहीं थी। उसका कहना था कि यदि वापस जाना था तो आये ही क्यों?

जैसे-तैसे फातिमा ने जेवर बेच कर, कुछ इधर-उधर से पैसे जुटा कर मकान बनाया। मकान को बनते देख हनीफ के एक गहरी चाल के तहत फिर समझौता कर लिया। मकान बनवाने के लिए उसने कर्ज लिया क्योंकि वह जानता था वह काम नहीं करेगा तो फातिमा कर्ज कहाँ से चुकाएगी। फिर तो खुद-ब-खुद मकान बेच कर गाँव चलेगी। लेकिन शायद वह इतने सालों में फातिमा को पहचान नहीं पाया था।

मकान बनने के बाद हनीफ उसे बेचने के लिए ग्राहक लाने लगा। फातिमा ने मकान बेचने से साफ मना कर दिया उसका कहना था कि मकान मेरा है, मैंने इसे बनाया और मेरी मर्जी के बिना यह नहीं बिक सकता। हनीफ ने भी काम बिल्कुल छोड़ दिया। सुबह उठते ही गली में ताश खेलने बैठ जाता और शाम तक ताश खेलता रहता।

फातिमा ने हार नहीं मानी और उसने कागज की फैक्ट्री में नौकरी शुरू की। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और लालन-पालन खुद ही करने लगी। बच्चों को अकेला छोड़ कर नौकरी पर नहीं जा सकती थी, इसलिए एक बार फिर उसने अपनी माँ को बुला लिया। लेकिन उसे यह बिल्कुल गवारा नहीं था कि वह गाँव जाकर दुबारा अपाहिज बन जाये।

हनीफ को उसने खाना देना बंद कर दिया और चूंकि हनीफ काम नहीं कर रहा था इसलिए पैसा भी नहीं था बाहर जाकर खा ले। एक दिन वह जुए में जीत गया। यहां भूखा रहते-रहते वह परेशान हो गया था। हाथ में पैसे आते ही उसने बच्चों से कहा कि वे तैयार रहें, शाम को दादी के घर चलेंगे। शाम को जब लौटा तो तीनों बच्चे सो रहे थे। आते ही चीखा-सुअर के बच्चों, सो रहे हो। इस बात को नूरी और रूबी कई बार कह चुकी थी कि अब्बू ये गाली मत दिया कीजिए क्योंकि सुअर तो आप ही बनते हैं। लेकिन गाली देना तो उसकी आदत थी।

नूरी उठी, सलीम को उठाया और उसे जल्दी से तैयार किया। वह खुद भी तैयार हुई और सामान उठाकर चलने के लिए तैयार हो गई। हनीफ ने पूछा कि रूबी कहाँ है। सो रही है-नूरी ने कहा। रूबी को भी उठाया। फिर हनीफ ने पूछा कि तुम नहीं जाओगी? उस पर रूबी ने कहा कि नहीं, मैं नहीं जाऊँगी। माँ घर में अकेली रहेंगी। मरने दो साली को। तुम्हें चला है? रूबी ने मना कर दिया। उसके बाद हनीफ नूरी और सलीम को लेकर गाँव चला गया। घर पर फातिमा और रूबी ही रह गये। कुछ दिन बाद फातिमा का काम भी छूट गया था इसलिए माँ-बेटी घर पर ही रहते और आपस में ही एक दूसरे का दिल बहलाते, गाने गाते या लूडो खेलते। इस बीच फातिमा ने कई जगह नौकरी ढूँढ़ी लेकिन कहीं काम नहीं मिला। थोड़ा बहुत उधार लेकर ही वह घर का खर्च चला रही थी। स्थिति ऐसी भी आ गई थी कि उन्हें कई दिन तक भूखा भी रहना पड़ा। लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। फिर उसे लोनी में जरदोगी का काम मिल गया। जिस मिस्त्री ने फातिमा का घर बनाया था उसने बहुत मदद की। वह फातिमा को अपनी बहन मानता था। उसी ने उसे जरदोगी का काम दिलवाया था। इसी तरह का एक व्यक्ति और फातिमा को अपना दोस्त मानता था। वह हमेशा आते ही दोस्त केसी हो कहाता, उसका नाम सुनील था।